श्रमजीवी जनता की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पर प्रतिपुष्टि एक अध्ययन

अनामिका देवांगन*
धानेश्वर हरचिंदन**

दूरस्थ शिक्षा का आरंभ पत्राचार शिक्षा से हुआ, जो मुद्रित सामग्री पर निर्भर था एवं संशोधित होते-होते इसने मुक्त शिक्षा का रूप ग्रहण कर लिया। वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के कारण यह ऑनलाइन एजुकेशन के नाम से भी जानी जाने लगी है। शिक्षा सिर्फ़ बेहतर सामाजिक न्याय की ही बात नहीं, बल्कि आर्थिक विकास और संपदा-सृजन के लिए भी महत्वपूर्ण बन गई है। सीखने में वयस्कों की भागीदारी किसी विशेष मुद्दे पर स्पष्टता प्राप्त करने या नयी नौकरी या जीवन की भूमिका के लिए तैयार करने के लिए एक व्यक्तिगत ज़रूरत से प्रेरित होती है। चूँकि दूरस्थ शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है — लोगों की आजीविका को उच्चतर करने हेतु अपनी शिक्षा जारी रखने में सहायता करना। इसलिए यह आवश्यक है कि आजीविका युक्त व्यक्ति अर्थात् श्रमजीवी व्यक्तियों की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (Open and Distance Learning—ODL) पर प्रतिपुष्टि प्राप्त कर, इसमें बेहतरी की आवश्यकताओं को ज्ञात किया जाए, ताकि ओ.डी.एल. शिक्षा पद्धति के इस उद्देश्य को पूर्णत: सार्थक बनाया जा सके। इस शोध पत्र में महाराष्ट्र राज्य के नवी मुंबई क्षेत्र में रहने वाले विभिन्न व्यावसायिक व्यक्तियों की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पर प्रतिपुष्टि प्राप्त कर इसमें बेहतरी की आवश्यकताओं को ज्ञात कर सुझाव दिए गए हैं।

प्रस्तावना

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (Open and Distance Learning—ODL) पद्धति एक ऐसी शिक्षा पद्धति है जो औपचारिक शिक्षा पद्धति में निहित बंधनों तथा नियमों से मुक्त है तथा जिसका लक्ष्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान तथा कौशल प्रदान करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु ओ.डी.एल. शिक्षा में विभिन्न उन्नत संचार माध्यमों तथा तकनीकों का प्रयोग किया जाता है तथा शिक्षार्थियों को अध्ययन की सुविधा तथा सहयोग प्रदान किया जाता है। वर्तमान समय में, जब हम डिजिटल भारत के स्वप्न को साकार करने के पथ पर हैं, तब ओ.डी.एल. शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ता हुआ प्रतीत होता है, क्योंकि इस समय प्रत्येक व्यक्ति के पास इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध

* *शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, मुंबई विद्यापीठ, विद्यानगरी, मुंबई, महाराष्ट्र 400 098
** *शोध निर्देशक*, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थान, मुंबई विद्यापीठ, विद्यानगरी, मुंबई, महाराष्ट्र 400 098

होने के कारण ओ.डी.एल. शिक्षा पद्धति की पहुँच का दायरा और अधिक विस्तृत हो गया है।

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का भी युग है। इस युग में प्रत्येक व्यक्ति को अद्यतन ज्ञान एवं कौशल अर्जित करना अत्यधिक आवश्यक हो गया है, परंतु आजकल व्यक्तियों के पास समय की कमी है और प्रतियोगिता अत्यधिक है। ऐसी स्थिति में ओ.डी.एल. शिक्षा, अद्यतन ज्ञान एवं कौशल अर्जित करने का एक उत्तम तथा उपयोगी माध्यम सिद्ध हो सकता है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा शिक्षा पद्धति को अलग-अलग शब्दावली के रूप में जाना जाता है, जैसे— बाहरी अध्ययन, निरंतर शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, आत्म-अनुदेश, प्रौढ़ शिक्षा, प्रौद्योगिकी आधारित या मध्यस्थता शिक्षा, शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा, खुली शिक्षा, खुली पहुँच, लचीली शिक्षा और वितरित शिक्षा आदि (प्रसन्ना, 2017)।

वर्तमान समय में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का आशय

वास्तव में, दूरस्थ शिक्षा ने उन लोगों के लिए अवसरों की खिड़की खोली है, जो आगे की पढ़ाई के लिए इच्छा रखते हैं। एक तरह से यह कई पेशेवरों, शालात्यागी (स्कूल और कॉलेज), गृहणियों इत्यादि को अपने अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए मदद करती है (सुभानी, 2017)। उच्च शिक्षा की सीमाएँ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से वैश्विक स्तर पर खुली हैं। यह उन शिक्षार्थियों को शैक्षणिक अवसर प्रदान करने के लिए है, जो उच्च शिक्षा के पारंपरिक संस्थान का लाभ नहीं ले सकते, रोज़गारयुक्त व्यक्तियों, महिलाओं और वयस्कों सहित जनसंख्या के एक बड़े खंड के लिए जो अपनी शिक्षा को उन्नत करना चाहते हैं या विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान और कौशल प्राप्त करना चाहते हैं (राव, 2017)। गृहणियों, पेशेवरों, विद्यार्थियों जो 18 वर्ष पूरे कर चुके हैं, यहाँ तक कि सेवानिवृत्त सहित सभी लोग मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के किसी भी प्रोग्राम में प्रवेश कर सकते हैं (एस. राधा, 2017)। दूरस्थ शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है— लोगों की आजीविका को उच्चतर करने हेतु अपनी शिक्षा जारी रखने में सहायता करना। दूरस्थ शिक्षा द्वारा लोग शैक्षिक रूप से समर्थ बन रहे हैं, वे सरकारी एवं निजी क्षेत्र में नौकरियाँ प्राप्त कर रहे हैं, कुछ प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम इनकी पदोन्नति हेतु उपयोगी हैं (कुमार और अन्य, 2017)। मुक्त शिक्षा गृहणियों, कृषि, औद्योगिक कार्यकर्ता और पेशेवर सहित सभी को अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए अवसर प्रदान करती है (धार और वाणी, 2017)।

इन परिभाषाओं के आधार पर हम यह स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पेशेवरों, रोज़गारयुक्त व्यक्तियों अर्थात् श्रमजीवी जनता हेतु अत्यधिक उपयोगी है। श्रमजीवी व्यक्तियों के संदर्भ में ओ.डी.एल. शिक्षा प्रणाली अधिक उपयुक्त तथा कारगर प्रतीत होती है, क्योंकि कार्य करते हुए स्वयं की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु ओ.डी.एल. की लचीली कार्यप्रणाली अधिक अनुकूल है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

संबंधित साहित्य के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि ओ.डी.एल. में अधिकांश शोध अध्ययन किसी विशेष ओ.डी.एल. संस्थान में नामांकित शिक्षार्थियों पर किए गए हैं तथा यह शोध अध्ययन किसी विशेष

ओ.डी.एल. कार्यक्रमों की आवश्यकता के संदर्भ में किए गए, जैसे—जी, उमा. और सिन्हा महापात्रा, मीता (2013), जेंडर, एग्रीकल्चर तथा सस्टेनेबल डेवलपमेंट में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रम हेतु आवश्यकता विश्लेषण। सुनन्दा राव, पी. (2003), मुक्त विश्वविद्यालय के अंडर ग्रेजुएट विद्यार्थियों हेतु आवश्यकता आधारित पाठ्यक्रम संरचना पर एक अध्ययन। ए.एन.एम.ए रहमान, ए.के.एम.ए.शाह, एम.एस.आलम और एम.एस.आलम (2005), विकास हेतु कौशल— दूरस्थ पद्धति द्वारा पशुधन और कुक्कुट में व्यावसायिक कार्यक्रम पर एक अध्ययन। ओ.डी.एल. के संदर्भ में सामान्य जनता की आवश्यकता से संबंधित शोध कार्य बहुत कम हुए हैं, जैसे—जैन, पी.के, उपाध्याय, एस. और हंसर, बी.एस. (2011), कृषि में मुक्त एवं दूरस्थ अध्ययन—त्रिपुरा (भारत) के किसानों के मत पर एक अध्ययन। शोधिका द्वारा सामान्य जनता, विशेष रूप से श्रमजीवी जनता की ओ.डी.एल. के संदर्भ में धारणा तथा बेहतरी की आवश्यकता के संदर्भ में शोध अध्ययनों की कमी पाई गई। अत: इस शोध पत्र में महाराष्ट्र राज्य के नवी मुंबई क्षेत्र में रहने वाले विभिन्न व्यावसायिक व्यक्तियों की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति हेतु उनके प्रतिपुष्टि प्राप्त कर इसमें बेहतरी की आवश्यकताओं पर चर्चा की गई है।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे—

1. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति के कार्यक्रमों हेतु श्रमजीवी जनता की प्रतिपुष्टि एवं भूमिका ज्ञात करना।
2. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति में बेहतरी की आवश्यकता को ज्ञात करना।
3. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति में बेहतरी हेतु श्रमजीवी जनता के सुझाव प्राप्त करना।

शोध प्रारूप

यह शोध पत्र, शोधिका द्वारा किए गए शोध अध्ययन का एक अंश है। इस अंश में विवरणात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में महाराष्ट्र राज्य के नवी मुंबई क्षेत्र में सिड्को द्वारा निर्मित तथा विकसित 12 नोड में स्थित सोसाइटी के सदस्यों (हाउस होल्ड) का चुनाव किया गया। जिनमें से सौद्देश्य प्रतिचयन विधि द्वारा 40 व्यावसायिक व्यक्तियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया। साक्षात्कार अनुसूची को शोध उपकरण के रूप में उपयोग कर साक्षात्कार लिया गया तथा प्राप्त आँकड़ों का व्याख्यात्मक विश्लेषण किया गया।

तथ्यों का विश्लेषण

शोध अध्ययन में साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर प्राप्त तथ्यों का विवरण इस प्रकार है—

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति के कार्यक्रमों हेतु श्रमजीवी जनता की प्रतिपुष्टि एवं भूमिका ज्ञात करना

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) के कार्यक्रमों हेतु प्रतिपुष्टि

तालिका 1 यह दर्शाती है कि सर्वाधिक 60 प्रतिशत श्रमजीवी जनता में ओ.डी.एल. के प्रति अधिक जागरूकता पाई गई तथा 27.5 प्रतिशत में कम जागरूकता पाई गई, जबकि केवल 12.5 प्रतिशत श्रमजीवी जनता में ओ.डी.एल. पद्धति के प्रति

तालिका 1— मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) के प्रति जागरूकता

आप मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) के प्रति कितने जागरूक हैं?	आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत
अधिक	24	60.0	60.0
कम	11	27.5	27.5
पूरी तरह से	5	12.5	12.5
कुल	40	100.0	100.0

जागरूकता पूरी तरह से पाई गई। प्रश्न, आप मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) के प्रति कितने जागरूक हैं, के स्पष्टीकरण में ओ.डी.एल. के प्रति कम जागरूक उत्तरदाताओं ने यह स्पष्ट किया है कि उन्होंने ओ.डी.एल. के कार्यक्रमों के बारे में सुना है, परंतु कौन-सी संस्था इसका संचालन कर रही है? प्रवेश प्रक्रिया क्या है? तथा अर्हता संबंधी तथ्यों की जानकारी का अभाव है। ओ.डी.एल. के प्रति अधिक जागरूक उत्तरदाताओं ने यह स्पष्ट किया है कि वे ओ.डी.एल. शिक्षा पद्धति के प्रति अधिक जागरूक हैं, परंतु इसके द्वारा कोई उपाधि प्राप्त नहीं की, ओ.डी.एल. के कार्यक्रम में प्रवेश किया, परंतु पूरा नहीं किया। ओ.डी.एल. के प्रति पूरी तरह से जागरूक उत्तरदाताओं ने यह स्पष्ट किया है कि वे ओ.डी.एल. शिक्षा पद्धति के प्रति पूरी तरह से जागरूक हैं, क्योंकि उन्होंने इसके द्वारा उपाधि प्राप्त की है।

अत: ओ.डी.एल. शिक्षा के संदर्भ में जागरूकता बढ़ाए जाने की आवश्यकता है, इसके लिए ओ.डी. एल. के संस्थानों को अपने कार्यक्रमों/पाठ्यक्रमों आदि के बारे में जानकारी के प्रसार हेतु सूचना और प्रचार सेल की स्थापना करनी चाहिए। प्रत्येक दूरस्थ शिक्षा संस्थान को अपने संक्षिप्त इतिहास, उपलब्धियों, कार्यक्रमों/ पाठ्यक्रमों की पेशकश, प्रवेश मानदंड, शुल्क इत्यादि पर प्रकाश डालने वाले माध्यमों का विकास किया जाना चाहिए (मुरली मनोहर 2017)।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति की भूमिका

(i) प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान तथा कौशल प्रदान करने में भूमिका

तालिका 2 से यह ज्ञात होता है कि 55 प्रतिशत श्रमजीवी जनता का यह मानना है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) प्रत्येक व्यक्ति

तालिका 2— ज्ञान तथा कौशल प्रदान करने में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति की भूमिका

क्या वर्तमान में, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान तथा कौशल प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है?	आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत
नहीं	18	45.0	45.0
हाँ	22	55.0	55.0
कुल	40	100.0	100.0

को ज्ञान तथा कौशल प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जबकि इसके लगभग बराबर 45 प्रतिशत जनता का यह मानना है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान तथा कौशल प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा रही है। ओ.डी.एल. शिक्षा अपेक्षाकृत एक नया क्षेत्र है और देर से ऊँचाइयों को प्राप्त किया है (प्रसन्ना 2017)। अत: इसकी ज्ञान तथा कौशल प्रदान करने में भूमिका के संदर्भ में उत्तरदाताओं के मध्य स्पष्ट अंतर नहीं पाया गया।

(ii) व्यावसायिक क्षेत्र के श्रमशक्ति के विकास में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति की भूमिका

तालिका 3 के अनुसार सर्वाधिक 97.5 प्रतिशत श्रमजीवी जनता का यह मानना है की ओ.डी.एल. उनके व्यावसायिक क्षेत्र के श्रमशक्ति के ज्ञान तथा कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। श्रमजीवी व्यक्तियों के संदर्भ में ओ.डी.एल. शिक्षा प्रणाली अधिक उपयुक्त तथा कारगर प्रतीत होती है, क्योंकि कार्य करते हुए स्वयं की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु ओ.डी.एल. की लचीली कार्यप्रणाली अधिक अनुकूल है। किसी संस्था में व्यावसायिक उन्नति संबंधी नीति तथा मूल्यांकन विधि, जो शिक्षा उपार्जन से बंधा हो, के कार्यशील व्यक्तियों के संदर्भ में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा वह माध्यम है जो कि उनके कार्य पर कोई समझौता नहीं माँगता है, अतः संस्था की व्यावसायिक उन्नति संबंधी नीति तथा मूल्यांकन विधि, जो शिक्षा उपार्जन से बंधा है, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को चयन करने हेतु प्रोत्साहन में मददगार होता है (पांडेय और सिंह, 2015)।

(iii) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति में कार्यक्रमों की उपलब्धता

तालिका 4 से यह ज्ञात होता कि सर्वाधिक 60 प्रतिशत श्रमजीवी जनता का यह मानना है कि उनकेव्यवसाय से संबंधित कार्यक्रमों की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (ओ.डी.एल.) में उपलब्धता पर्याप्त नहीं है। ये श्रमजीवी जनता निम्न व्यवसाय से संबंधित हैं— उद्योगपति, दलाल/भूमि भवन, आई. टी. प्रोफ़ेशनल, वकील, शिक्षक, क्लर्क, व्यापारी/दुकानदार, संचालक/निरीक्षक तथा सेवा उद्योग।

तालिका 3— व्यावसायिक क्षेत्र में श्रमशक्ति के विकास में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति की भूमिका

क्या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) आपके व्यावसायिक क्षेत्र के श्रमशक्ति के ज्ञान तथा कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है?	आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत
हाँ	39	97.5	97.5
नही	1	2.5	2.5
कुल	40	100.0	100.0

तालिका 4 — मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति में विभिन्न व्यवसाय से संबंधित कार्यक्रमों की उपलब्धता

क्या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (ओ.डी.एल.) में आपके व्यवसाय से संबंधित कार्यक्रम उपलब्ध हैं?	आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत
नहीं	24	60.0	60.0
हाँ	16	40.0	40.0
कुल	40	100.0	100.0

(iv) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति में कार्यक्रमों को विकसित करने की आवश्यकता

तालिका 5 यह दर्शाती है कि सर्वाधिक 90 प्रतिशत श्रमजीवी व्यक्ति यह मानते हैं कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) में उनके व्यवसाय से संबंधित कार्यक्रमों को विकसित करने की आवश्यकता है। उत्तरदाता जो उद्योगपति, दलाल/भूमि भवन, आई. टी. प्रोफ़ेशनल, डॉक्टर, कुशल कामगार (गैर उद्योगी), सेवा उद्योग, वकील, कुशल कामगार (उद्योगी), शिक्षक, क्लर्क, व्यापारी/दुकानदार, संचालक/निरीक्षक, श्रेणी के श्रमजीवी हैं जिनके द्वारा ओ.डी.एल. में अपने व्यवसाय से संबंधित कार्यक्रमों को विकसित करने की आवश्यकता व्यक्त की गई। इस संदर्भ में आई. टी. प्रोफ़ेशनल, संचालक/निरीक्षक तथा सेवा उद्योग के श्रमजीवी व्यक्तियों द्वारा सर्वाधिक आवश्यकता व्यक्त की गई।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) के कार्यक्रमों में बेहतरी की आवश्यकता

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) के कार्यक्रमों में बेहतरी की आवश्यकता

तालिका 6 से यह ज्ञात होता है की 100 प्रतिशत श्रमजीवी जनता का यह मत है कि ओ.डी.एल. में बेहतरी की आवश्यकता है। मुरली मनोहर (2017) के अनुसार मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को समाज के अनुरूप बनाने हेतु पुनर्निर्मित करने की आवश्यकता है। कुल उत्तरदाताओं में से 55 प्रतिशत श्रमजीवी जनता के अनुसार ओ.डी.एल. में बेहतरी की आवश्यकता अधिक है, जबकि 45 प्रतिशत श्रमजीवी जनता के

तालिका 5— मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति में कार्यक्रमों को विकसित करने की आवश्यकता

क्या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) में आपके व्यवसाय से संबंधित कार्यक्रमों को विकसित करने की आवश्यकता है?	आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत
नहीं	4	10.0	10.0
हाँ	36	90.0	90.0
कुल	40	100.0	100.0

तालिका 6— मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) के कार्यक्रमों में बेहतरी की आवश्यकता

क्या आप ऐसा महसूस करते हैं की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) के कार्यक्रमों में बेहतरी की आवश्यकता है?	आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत
सामान्य	18	45.0	45.0
अधिक	22	55.0	55.0
कम	0	0	0
कुल	40	100.0	100.0

अनुसार ओ.डी.एल. में बेहतरी की आवश्यकता कम है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) के क्षेत्रों में बेहतरी की आवश्यकता

तालिका 7 से यह ज्ञात होता है कि ओ.डी.एल. में बेहतरी की आवश्यकता के संदर्भ में 27.5 प्रतिशत श्रमजीवी जनता द्वारा शिक्षार्थी सहायता सेवा में बेहतरी की आवश्यकता को व्यक्त किया गया। 30 प्रतिशत श्रमजीवी जनता द्वारा ओ.डी.एल. से प्राप्त उपाधियों की मान्यता में बेहतरी की आवश्यकता को व्यक्त किया गया। 21वीं सदी में दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है, फिर भी एक आम राय है कि औपचारिक शिक्षा के साथ तुलना करते समय दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता कम ही आँकी जाती है (देमिरेल, 2016)। प्रवेश नीति, मूल्यांकन विधि एवं संचार माध्यम तथा तकनीकी में क्रमशः 15 प्रतिशत, 7.5 प्रतिशत तथा 20 प्रतिशत श्रमजीवी जनता द्वारा बेहतरी की आवश्यकता को व्यक्त किया गया।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति में बेहतरी हेतु सुझाव

उत्तरदाताओं द्वारा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति में बेहतरी हेतु निम्न सुझाव दिए गए—

तालिका 7— मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) के क्षेत्रों में बेहतरी की आवश्यक्ता

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति (ओ.डी.एल.) के किस क्षेत्र में आप बेहतरी की आवश्यकता महसूस करते हैं?	आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत
प्रवेश नीति	6	15.0	15.0
संचार माध्यम तथा तकनीकी	8	20.0	20.0
मूल्यांकन प्रक्रिया	3	7.5	7.5
शिक्षार्थी सहायता सेवा	11	27.5	27.5
उपाधि की मान्यता	12	30.0	30.0
कुल	40	100.0	100.0

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के सभी व्यावसायिक कार्यक्रमों में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा अनिवार्य रूप में ली जानी चाहिए तथा इस परीक्षा की तैयारी हेतु अध्ययन सामग्री ओ.डी.एल. संस्थानों द्वारा दी जानी चाहिए। ओ.डी.एल. शिक्षा में नामांकित करने वाले प्रत्येक शिक्षार्थी को कंप्यूटर तथा तकनीकी से संबंधित जानकारी, जैसे— इसे कैसे इस्तेमाल में लाया जाए तथा इसमें आने वाली समस्याओं को उल्लेखित किया जाना चाहिए, मुरली मनोहर (2017) द्वारा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के पुनःनिर्माण हेतु समान सुझाव दिए गए। स्थानीय एफ.एम. रेडियो स्टेशनों का उपयोग करके रेडियो पाठ प्रदान किया जाना चाहिए। डिस्कवरी और हिस्ट्री आदि चैनल जो केबल ऑपरेटर द्वारा प्रदान की जाती है, के समान ही मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा हेतु एक अलग से चैनल होना चाहिए। जिसमें पाठ्यक्रम से संबंधित स्पष्टीकरण मनोरंजक रूप में दिया जाना चाहिए तथा इसके बारे में जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए। सीडी कार्टून या मूविंग ड्राइंग के रूप में सिद्धांतों का स्पष्टीकरण किया जाना चाहिए ताकि समझना आसान हो सके। चलचित्र का निर्माण वीडियो निर्माण की अपेक्षा कम लागत में संपन्न किया जा सकता है। अत: इसका उपयोग किया जाना चाहिए। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण कार्य में प्रायोगिक कार्य या प्रोजेक्ट कार्य अधिक होना चाहिए।

शिक्षार्थी सहायता सेवा के अंतर्गत शिक्षार्थी के पाठ्यक्रम संबंधी समस्याओं, जैसे— पाठ्यक्रम की कोई विषय-वस्तु समझ में न आना या किसी भी प्रकार की समस्या हो तो उस विषय के विशेषज्ञ से ज्ञान प्राप्त करने की सुविधा शिक्षार्थियों के अनुसार दी जानी चाहिए। सिंह (2011) द्वारा समान संदर्भ में सुझाव दिया गया है। इसके लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में विशेषज्ञों की उपस्थिति नियमित तथा अनिवार्य होनी चाहिए। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में औपचारिक शिक्षा पद्धति के समान ही नियमित प्राध्यापकों की भर्ती होनी चाहिए।

प्रत्येक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में सभी प्रकार की जानकारियों को अंग्रेज़ी तथा स्थानीय भाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा में भी उल्लेखित किया जाना चाहिए। ओ.डी.एल. द्वारा प्रदान की जाने वाली उपाधियों की मान्यता के संदर्भ में उत्तरदाताओं का सुझाव है कि प्रत्येक व्यक्तिगत तथा सरकारी संस्थानों में औपचारिक शिक्षा द्वारा प्राप्त उपाधियों के समान ही ओ.डी.एल. द्वारा प्रदत्त उपाधियों को मान्यता देने हेतु प्रावधान बनाया जाना चाहिए। देमिरेल (2016) के अनुसार 21वीं सदी में दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है, फिर भी एक आम राय है कि औपचारिक शिक्षा के साथ तुलना करते समय दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता कम ही आँकी जाती है।

निष्कर्ष

इस शोध के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि ओ.डी.एल. शिक्षा के संदर्भ में जागरूकता बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में सुझाव प्राप्त हुआ कि ओ.डी.एल. के संस्थानों को अपने कार्यक्रमों/पाठ्यक्रमों आदि के बारे में जानकारी के प्रसार हेतु सूचना और प्रचार सेल की स्थापना

करनी चाहिए (मुरली मनोहर, 2017)। इस संदर्भ में समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में ओ.डी.एल. हेतु एक विशेष स्थान रखा जाना चाहिए, जिसमे केवल ओ.डी.एल. से संबंधित खबरों को ही प्रकाशित किया जाना चाहिए। टी.वी. तथा रेडियो में भी ओ.डी.एल. से संबंधित खबरों हेतु एक समय को निश्चित किया जाना चाहिए।

कार्यक्रमों की उपलब्धता के संदर्भ में उद्योगपति, दलाल/भूमि भवन, आई. टी. प्रोफ़ेशनल, डॉक्टर, कुशल कामगार (गैर उद्योगी), सेवा उद्योग, वकील, कुशल कामगार (उद्योगी), शिक्षक, क्लर्क, व्यापारी/दुकानदार, संचालक/निरीक्षक व्यवसाय से संबंधित कार्यक्रमों की ओ.डी.एल. शिक्षा पद्धति में उपलब्धता कम पाई गई। अत: इन क्षेत्रों के कार्यक्रमों को विकसित करने की आवश्यता है। ओ.डी.एल. शिक्षा पद्धति में बेहतरी की आवश्यकता पाई गई तथा यह आवश्यकता उपाधियों की मान्यता, शिक्षार्थी सहायता सेवा, संचार माध्यम तथा तकनीकी के क्षेत्र में अधिक पाई गई, इसलिए इन क्षेत्रों हेतु बेहतरी के सुझावों को शीघ्र अमल में लाकर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को समाज हेतु और अधिक कल्याणकारी बनाया जा सकता है।

संदर्भ

अग्रवाल, यु. सी. 2010. दूरस्थ प्रणाली के माध्यम से 'उच्च शिक्षा' ऐतिहासिक लेखा-जोखा. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. जुलाई 2010. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

कुमार, ए. 2010. 21वीं सदी में उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ — भविष्योंमुखी दृष्टि और उच्च शिक्षा. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

चाइल्डज़, एस. ब्लेंकिनो, ई., हॉल, ए., और वाल्टन, जी. 2005. स्वास्थ्य पेशेवरों और विद्यार्थियों के लिए प्रभावी ई-लर्निंग बाधाओं और उनके समाधान साहित्य की एक व्यवस्थित समीक्षा — हेक्सल परियोजना से निष्कर्ष. *स्वास्थ्य सूचना और पुस्तकालय पत्रिका*. 22 (0), 20–32.

डार, एम. ए. और वानी, एस.आर. 2017. ओएमडी सिस्टम के संदर्भ में जम्मू और कश्मीर में उच्च शिक्षा का रुझान. भारत में मुक्त और दूरस्थ शिक्षा पर 21वाँ वार्षिक सम्मेलन — उभरते मुद्दें और चुनौतियाँ. मई 2017.

देमिरेल, इ. 2016. दूरस्थ शिक्षा की आधिकारिक मान्यता. समुद्री संकाय, पिरी रीस विश्वविद्यालय, तुर्की.
https://www.learntechlib.org/p/54800

पांडेय, जे. और सिंह, एम. 2015. मुश्किल भौगोलिक में दूरस्थ शिक्षा तथा कार्यशील व्यवसायी के मध्य दूरी की व्याख्या करना. *गुणात्मक प्रतिवेदन*. 2015 अंक 20, क्रमांक 5, लेख 4. पृ. 596–607.
http://www.nova.edu/ssss/QR/QR20/5/pandey4.pdf

प्रसन्ना, के. 2017. भारत में दूरस्थ शिक्षा – एक समीक्षा. भारत में मुक्त व दूरस्थ शिक्षा — उभरते मसले एवं चुनौतियों पर 21वाँ वार्षिक सम्मेलन, मई 2017.

राव, के. आर.; मंडली, के.के.; राव, के.के.; लोटेक, टी.आर.; इपुरी, डी. और कुमार, वाई. ए. 2017. शिक्षा के माध्यम से शिक्षा सशक्तिकरण संभव है? भारत में मुक्त और दूरस्थ शिक्षा पर 21वाँ वार्षिक सम्मेलन — उभरते मुद्दे और चुनौतियाँ. मई, 2017.

राव, के.पी. 2017. मुक्त और दूरस्थ शिक्षा संस्थान में शिक्षण सीखने की रणनीतियाँ — बदलते परिदृश्य. भारत में मुक्त और दूरस्थ शिक्षा पर 21वाँ वार्षिक सम्मेलन — उभरते मुद्दे और चुनौतियाँ. मई 2017.

http://www.nuepa.org/New/Pub_Pripreksh.aspx

वेंकटेशम, एम. 2017. भारत में दूरस्थ शिक्षा के प्रबंधन का अवलोकन. भारत में मुक्त और दूरस्थ शिक्षा पर 21वाँ वार्षिक सम्मेलन — उभरते मुद्दें और चुनौतियाँ. मई 2017.

शर्मा, के. और शर्मा, डी. 2015. बदलते परिदृश्य में उच्च शिक्षा का स्वरूप और विकास. *परिप्रेक्ष्य — शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक-आर्थिक संदर्भ*. वर्ष 22, अंक 3, दिसंबर 2015, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (न्यूपा), नयी दिल्ली.

सिंह, जे.डी. 2011. भारत में उच्च शिक्षा के मुद्दे, चुनौतियाँ एवं सुझाव. *परिप्रेक्ष्य — शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक-आर्थिक संदर्भ*. वर्ष 18, अंक 1, अप्रैल 2011

सुभानी, एस. आर. 2017. मुक्त और दूरस्थ शिक्षा — छात्र सहायता सेवा की भूमिका. मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, *हैदराबाद का एक मामला अध्ययन*. भारत में मुक्त और दूरस्थ शिक्षा पर 21वाँ वार्षिक सम्मेलन — उभरते मुद्दें और चुनौतियाँ. मई 2017.